भगवान विष्णु के ग्यारह अवतारों में से दूसरा अवतार कूर्मावतार है। पुराणों के अनुसार कूर्मावतार के रूप में भगवान विष्णु ने क्षीर सागर में समुद्र मंथन के समय मंदार पर्वत को अपनी पीठ (कवच) पर धारण कर लिया था। पद्मपुराण के अनुसार इंद्र ने दुर्वासा द्वारा प्रदत्त पारिजात माला का अपमान किया तो दुर्वासा के श्राप के अनुसार इंद्र का वैभव नष्ट हो गया परिणामस्वरूप लक्ष्मी समुद्र में विलुप्त हो गई। तब भगवान विष्णु ने लक्ष्मी को पुनः प्राप्त करने के लिए वासुकी नाग की डोर तथा मंदराचल पर्वत की मथनी बनाकर समुद्र मंथन करवाया। मंथन के समय जब मंदराचल पर्वत रसातल में जाने लगा तो विष्णु ने कछुए का रूप धारण किया और मंदार पर्वत को अपनी पीठ पर धारण किया। देवताओं तथा दानवों ने समुद्र मंथन से अमृत एवं लक्ष्मी सहित चौदह रत्नों की प्राप्ति की। पौराणिक चित्रों में कछुए की प्रजातियों को गंगा एवं यमुना के प्रतीक के रूप में दर्शाया गया है।

© आशा जैन

पुराणों में गंगा के जीव

कूर्मावतार (कछुआ)

गंगा नदी में पाई जाने वाली कछुए की प्रजातियां

भारत में पाये जाने वालें ताजे पानी के कछुओं की 24 प्रजातियों में से 13 प्रजाति के कछुए गंगा में पाये जाते हैं।

महत्व

कछुआ जलीय पौधों को नियंत्रित करता है, नदी तथा पोखर को स्वच्छ तथा पारिस्थितिकी तंत्र को स्वस्थ बनाये रखने में अहम् भूमिका निभाता है।

संकट के कारण

प्राकृतिक आवासों का ह्रास एंव अवैध शिकार।